पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.07.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

कारगिल के शहीदों
को नमन करने व
शहीद चन्द्रशेखर आजाद जन्मोत्सव
रविवार, 26 जुलाई 2015,
प्रातः 11 बजे
जन्तर मन्तर, नई दिल्ली
भारी संख्या में पंहुचे
—अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-32 अंक-4 श्रावण-2072 दयानन्दाब्द 191 16 जुलाई से 31 जुलाई 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने 114 वें जन्मोत्सव पर डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को दी श्रद्धाजंलि

धारा 370 को समाप्त करना ही डा.मुखर्जी को सच्ची श्रद्धाजंलि— डा.अनिल आर्य,राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली। सोमवार, 6 जुलाई 2015,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में ''जन्तर मन्तर'' पर भारतीय जनसंघ के संस्थापक अमर शहीद डा.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के 114 वें जन्मोत्सव पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में ''राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ'' का आयोजन कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सैकड़ों आर्य समाजियों ने पहुॅच कर देश की एकता व अखण्डता के लिये यज्ञ में आहुतियां डाली। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई जी ने यज्ञ करवाया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त कर उसे देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ा जाये, उन्होंने कहा कि धारा 370 हटाना ही केन्द्र सरकार की डा.मुखर्जी को सच्ची श्रद्धाजलि होगी, देश में जब तक समान आचार संहिता लागु नहीं होगी तब तक सब बाते अधुरी हैं। डा.आर्य ने कहा कि जम्मू—कश्मीर में सेना को खुली छूट दी जाये जिससे वह आंतकवादियों व उनके सरंक्षकों को सख्ती से कुचले सके, यह दुर्भाग्य पूर्ण है कि आज पाकिस्तान और आई.एस.आई. के झण्डे कश्मीर में लहराये जा रहे हैं। ऐसे लोगों से सरकार को कठोरता से निपटाना चाहिये।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने कहा कि डा.मुखर्जी महान राष्ट्र भक्त थे,उन्होंने राष्ट्र के लिये सम्पूर्ण जीवन बलिदान कर दिया, आज उन्हीं की विचारधारा की केन्द्र में सरकार है, अब सरकार का दायित्व बनता है कि जिन उद्देश्यों के लिये डा.मुखर्जी ने बलिदान दिया था वह उन स्वपनों को पूरा करे। अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा के अध्यक्ष सन्दीप आहुजा ने कहा कि जब तक देश में एक समान आचार सहिंता लागू नहीं होगी तब तक समस्या का हल नहीं होगा, उन्होंने बंगलादेशी घुसपैठियों को देश की सीमा से बाहर निकालने की मांग की, वह आज देश की सुरक्षा व अखण्डता के लिए खतरा बन चुके हैं।

आर्य नेता सुरेन्द्र शास्त्री ने डा.मुखर्जी के जीवन चरित्र को पाठयपुस्तकों में समुचित स्थान देने की मांग की व प्रधानमन्त्री से डा.मुखर्जी के नाम से कोई नयी परियोजना चलाने का अनुरोध किया।

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि डा.मुखर्जी का उद्घोष ''एक देश में दो विधान,दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेगे इसे सार्थक करने की आवश्यकता है। आर्य जन ''जहां हुए बलिदान मुखर्जी, वह कश्मीर हमारा है'' के नारे लगा रहे थे।

आर्य नेता देवेन्द्र भगत, यज्ञवीर चौहान, प्रणवीर आर्य, विजय सब्रवाल, हरिचन्द आर्य, सुदेश भगत, चन्द्र दुर्गा, स्वामी ओम जी, अरूण आर्य, माधव आर्य, के.एल.राणा, अरविन्द मिश्रा, विमल आर्य, शिवम मिश्रा आदि उपस्थित थे। प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय गृहमन्त्री व केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का आर्य कन्या शिविर सोल्लास सम्पन्न

बालिकाओं के निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण सम्भव -डा. अशोक कु. चौहान

रविवार, 28 जून 2015, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल,पंजाबी बाग, दिल्ली में सम्पन्न हुआ। शिविर में 140 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समारोह के मुख्य अतिथि आर्य नेता डा.अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष,ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि आज के युग में संस्कारों की महती आवश्यकता है,बालिकाओं के निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। चित्र में डा.अशोक कुमार चौहान सम्बोधित करते हुए। इस अवसर पर साध्वी उतमा यति,मृदुला चौहान,आनन्द चौहान, विमला मलिक,डा.जयेन्द्र आचार्य, शीला ग्रोवर, आदर्श सहगल, सुरेन्द्र बुद्धिराजा आदि उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता श्री सत्यानन्द आर्य ने की व ध्वजारोहण ठाकुर विक्रम सिंह ने किया। कुशल संचालन आरती खुराना ने किया।

'वेद पारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का औचित्य और प्रासंगिकता'

आर्य जगत की पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समय–समय पर ज्ञात होता है कि अमुक–अमुक स्थान पर बहुकुण्डीय यज्ञ हो रहा है व कहीं किसी एक वेद और कहीं चतुर्वेद पारायण यज्ञ हो रहें हैं। यदा–कदा यह सुनने को भी मिलता है कि किसी स्थान पर एक विशाल यज्ञ हो रहा है जिसमें लाखों व करोड़ों आहुतियां दी जायेंगी तथा कई महीनों चलने वाले उस यज्ञ में मनों व टनों शुद्ध गोधृत व विशेष रूप से तैयार की गई हवन सामग्री से हवन किया जायेगा। हम इन यज्ञों को करने वाले याज्ञिक बन्धुओं की भावनाओं का हृदय से आदर करते हैं परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या यह सब यज्ञ वेदसम्मत, महर्षि दयानन्द सम्मत, प्रासंगिक, समयानुकूल व उचित हैं? यह तथ्य है कि यज्ञों में विकार आने के कारण ही महाभारत के बाद मध्यकाल में वैदिक धर्म का पतन हुआ था। आजकल किये जाने वाले इन वेदपारायण व अन्य वृहत्त यज्ञों का भी आगामी दशाब्दियों व शताब्दियों बाद यही रूप रहेगा या और अधिक श्रृगांर को प्राप्त होकर इनमें भी मध्यकालीन यज्ञों की भांति विकृतियां आयेंगी और यह यज्ञ सामान्य लोगों से दूर हो जायेगें। एक प्रश्न यह भी है कि क्या महाभारत काल व उससे पूर्व इस प्रकार के यज्ञ होते थे अथवा नहीं? आईये, इस पर निष्पक्ष विचार करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लिखें है। पूना में दिये उनके 15 प्रवचनों का संग्रह भी उपलब्ध है। उनके जीवन चरित्र से भी उनके जीवन की घटनाओं व विचारों का पता चलता है। हमने प्रायः उनके सभी ग्रन्थों को देखा व पढ़ा है। वैदिक साहित्य में परिगणित अन्य अनेक ग्रन्थों को पढ़ा है जिनमें यज्ञ विषयक ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं। हमें कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिला कि महाभारतकाल व उसके बाद आर्य समाज की स्थापना तक वेद पारायण यज्ञ भारत में कहीं होते थे। बहुकुण्डीय यज्ञ का प्राचीन विधान भी कहीं देखने, सुनने व पढ़ने को नहीं मिला। गायत्री मन्त्र या अन्य किन्हीं मन्त्रों से सहस्र, सहस्राधिक या लक्ष आहुतियां देने वाले यज्ञों का वर्णन भी नहीं मिला। वेदों के किसी मन्त्र से भी ऐसा आभाष नहीं होता। अतः प्रतीत होता है कि इस प्रकार के यज्ञ आर्य याज्ञिकों की अपनी सोच व ऊहा का परिणाम हैं। इनसे जो लाभ होते हैं वह तो विचार कर जाने जा सकते हैं परन्तु हानि यह हो रही लगती है कि वेदों का जन–जन में जो प्रचार महर्षि दयानन्द करना व करवाना चाहते थे, जिसका विधान उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम में किया है, उस कार्य के क्रियान्वयन में कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो रही है। जिन लोगों को जन–जन में प्रचार करना था वह वृहत यज्ञों की योजनायें बनाने, उनके क्रियान्वयन व उसमें होने वाले व्यय हेतु धन व अन्य साधनों के संग्रह में ही अपना पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं। इससे जो समय बचेगा, उसी में तो वेद प्रचार होगा। हमें लगता है कि इस प्रकर के वृहत यज्ञों के कारण भी आर्य नेताओं, विद्वानों, याज्ञिकों व कार्यकत्ताओं का ध्यान वेद प्रचार से हट कर वृहत वेद पारायण आदि यज्ञों में लगा हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि यज्ञ न करने वाले धर्म प्रचारकों की संख्या आशातीत बढ़ती जा रही है तथा हमारी संख्या सीमित या घट रही है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि, यह दो ग्रन्थ कर्मकाण्ड के दिये हैं। पंचमहायज्ञ विधि में दैनिक यज्ञ–अग्निहोत्र की विधि दी गई है। यज्ञ से लाभ व न करने पर होने वाली हानि के विषय में भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, पूना प्रवचन आदि ग्रन्थों में प्रकाश डाला है। दैनिक यज्ञों के अतिरिक्त संस्कार विधि में सोलह संस्कारों सहित विशेष यज्ञों का प्राविधान किया है जिसमें अमावस्या व पूर्णिमा पर किये जाने वाले पक्षेष्टि यज्ञ भी सम्मिलित हैं। यज्ञों पर इतना अधिक लिखने पर भी उन्होंने कहीं यह संकेत नहीं किया कि यदि कोई विद्वान वा यज्ञप्रेमी वृहत यज्ञ करना चाहे तो वह वेद पारायण यज्ञ करे व करवाये अथवा बहुकुण्डीय यज्ञ आदि करे व करवाये। महर्षि दयानन्द का ध्यान इस बात पर केन्द्रित दिखाई देता है कि यज्ञ में स्वच्छता हो, सरलता हो, जटिलता समाप्त हो, किसी भी प्रकार की हिंसा न हो, वातावरण पूर्ण धार्मिक हो, यज्ञ अल्प समय, अल्प साधनों व व्यय कर सम्पन्न हो सकें, निर्धन भी प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ कर धर्म लाभ प्राप्त कर सकें जिससे अधिक से अधिक यज्ञ होने से देश व प्रजा का उपकार व हित हो। हमारा अनुमान है कि यज्ञों का प्रावधान घर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों तथा श्रौतसूत्रों में मिलता हैं। उनमें भी आर्य जगत में प्रचलित आजकल किये जाने वाले वृहत् यज्ञों की भांति महायज्ञों के करने–कराने का विधान नहीं है। अतः इस विषय पर सभी आर्य विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों एवं याज्ञिकों द्वारा विचार किया जाना समीचीन है।

वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति है। हमारे सभी कार्य, उपासना एवं अन्य कर्मकाण्ड इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाये गए हैं। प्राचीन काल से यह यज्ञादि कर्मकाण्ड किए जाते आ रहें हैं एवं वर्तमान समय में भी इन्हें करना चाहिये। जीवन का उद्देश्य धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष प्राप्त होने व इसकी प्राप्ति होने पर उद्देश्य पूरा हो जाता है। दर्शनकार कहते

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हैं कि मनुष्य को उपासना कर ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहिये। ईश्वर साक्षात्कार से मनुष्य जीवन–मुक्त हो जाता है जिसका परिणाम इसी जन्म या आगामी एक या कुछ जन्मों के बाद भोगतव्य कर्मों को भोगने के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। अशुभ कर्म तो सभी को भोगने ही होंगे। इन भोगों के समाप्त व शेष न रहने पर ही उपासना द्वारा ईश्वर–साक्षात्कार होने पर मुक्ति वा मोक्ष प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर साक्षात्कार के साधन "सन्ध्या" के उपस्थान मन्त्रों में यह भी लिख दिया कि है कि 'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृप्या अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवनेनः' अर्थात् 'हे दया के भण्डार परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे अनेकानेक जप–उपासना आदि कर्मों के आधार पर हमें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की आज ही सिद्धि व प्राप्ति कराईये।' यज्ञ में वह स्विष्टकृदाहुति तथा पूर्णाहुति का प्रावधान करते हैं। इनमें ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की बात नहीं कही गई है। यदि प्राजापत्याहुति की भी बात करें जिसे मौन होकर दी जाती है तो वहां भी यह कहा जाता है कि कि प्रजा के स्वामी ईश्वर की प्रसन्नता के लिए यह आहुति देते हैं। यह शुद्ध गोघृत की हमारी आहुति प्रजापति ईश्वर के लिए है, इदन्न मम, यह मेरी नहीं है। यह निष्काम व समर्पित भाव से दी जाने वाली आहुति है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यज्ञ करने से ईश्वर साक्षात्कार नहीं होता, हां यज्ञ ईश्वर साक्षात्कार के पूरक हैं। सन्ध्या–उपासना की सफलता ही ईश्वर का साक्षात्कार कराती है और यही ईश्वर की प्राप्ति की उच्चतम व शिखर अवस्था है। यह प्राप्त होने पर तो जीवन–मुक्ति का लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। अब अन्य किसी फल की तो अपेक्षा ही नहीं है। यज्ञ पर आगे विचार करें तो यज्ञ से आध्यात्मिक व भौतिक लाभ होते हैं जिसमें पर्यावरण की शुद्धता, आरोग्य, आयु की वृद्धि आदि लाभ होते हैं। यज्ञ के इन लाभों व उपासना के लाभ ईश्वर साक्षात्कार एवं धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्राप्ति सर्वोत्तम व सर्वाधिक लाभ है। अतः इस ओर भी हमारे यज्ञ प्रेमियों को ध्यान देना चाहिये। इन दोनों कर्मों को करके जिससे जितना लाभ होता है, उतना ही करना उचित है। ऐसा नहीं होना चाहिये कि कम लाभ होने वाले कर्म को अधिक करें और अधिक लाभ देने वाले कर्म को कम महत्व दें।

यहां यह भी विचारणीय है कि दैनिक अग्निहोत्र के अन्तर्गत किया जाने वाला यज्ञ यजमान को इहलौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के लाभ पहुंचाता है। शुद्ध भावना से कोई भक्त हृदय वा यज्ञ प्रेमी यदि वृहत यज्ञ करता है तो इससे किसी प्रकार की हानि होती प्रतीत नहीं होती जैसी कि मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जाति व्यवस्था आदि कार्यों से होती है। अतः वृहत यज्ञ भी किया जा सकता है परन्तु देखने वाली बात यह है कि इससे वेद प्रचार के वांछित साधनों एवं इस कार्य में जितने समय व पुरूषार्थ की आवश्यकता है उसमें किसी प्रकार की कमी न आये। आज तो वृहत यज्ञ में विकृतियां कुछ कम हैं परन्तु कालान्तर में क्या होगा इस पर कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इतिहास अपने आप को दोहराता है, यह कहावत है। अतः यज्ञों को अधिक से अधिक सरल व अल्प व्यय व समय साध्य बनाना व रखा जाना जनहित में है। अतः जहां तक हो सके दैनिक व विशेष यज्ञों तक ही सीमित रहा जाये तो अत्युत्तम है जिससे आज समयाभाव के युग में लोग यज्ञ कर सकें। हमारा यह भी मत है कि यज्ञ प्रेमी उपासना में अधिक ध्यान देकर स्वयं यह निर्धारित करें कि क्या महर्षि दयानन्द प्रोक्त दैनिक व विशेष यज्ञों में कहीं कोई कमी रह गई है? कहीं उनका वृहत यज्ञों के रूप में वेदपारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का कृत्य महर्षि दयानन्द के प्रति अविश्वास व वैदिक कर्मकाण्ड की उदात्त भावना के विपरीत तो नहीं है? इसका निर्णय हम वेद व यज्ञ के मर्मज्ञ विद्वानों पर छोड़ते हैं। हमने वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान डा. रामनाथ वेदालंकार जी के "यज्ञ मीमांसा" ग्रन्थ में विवेचित वेदपारायण–यज्ञ, गायत्री यज्ञ, बहुकुण्डी यज्ञ, यज्ञ को महिमामण्डित किस सीमा तक करें? शीर्षक के अन्तर्गत विचारों को भी देखा है। हमें लगता है कि सभी यज्ञ प्रेमियों व विद्वानों को इस ग्रन्थ का अध्ययन कर अपना कर्तव्य निर्धारित करना चाहिये।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

श्रावणी पर्व पर नोएडा में वेद गोष्ठी

आर्य समाज,सैक्टर–33,नोएडा में दिनांक 21,22,23 अगस्त 2015 को वेद विषयक वेद गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। डा. महेश विद्यालंकार,डा.वेदपाल,डा.धर्मेन्द्र शास्त्री,डा.नरेन्द्र वेदालंकार,डा.राजकिशोर शास्त्री आदि विद्वान अपने विचार रखेंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

–कै.अशोक गुलाटी,संयोजक

आर्य समाज की महान विभूति : डॉ. भवानी लाल भारतीय

स्वामी दयानंद कि वैदिक विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने में हज़ारों आर्यों ने अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दिया। साहित्य सेवा द्वारा श्रम करने वालो ने पंडित लेखराम की अंतिम इच्छा को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया। डॉ भवानीलाल भारतीय आर्य जगत कि महान विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में 1 मई 1928 को भारतीय जी का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात आपने अध्यापन करते हुए हिंदी एवं संस्कृत दो भाषाओँ में एम.ए किया। कालांतर में आपने आर्यसमाज की संस्कृत भाषा को देन विषय पर शोध प्रबंध लिखा जिसे पंडित भगवत दत्त सरीखे मनीषी द्वारा सराहा गया। आप आर्यसमाज पाली,अजमेर के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी रहे। आप स्वामी दयानंद चेयर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के अध्यक्ष पद से सेवा निवृत हुए। डॉ भारतीय जी का लेखन–

१. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ ऋषि दयानंद और अन्य भारतीय धर्माचार्य,महर्षि दयानंद और राजा राममोहन राय, आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा, महर्षि दयानंद और स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद और ईसाई मत,

२. वेद विषयक ग्रन्थ वेदों में क्या हैं?, वेदाध्ययन के सोपान, उपनिषदों की कथाएं भाग १, ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद एवं अथर्ववेद परिचय, वेदों की अध्यात्मधारा, वैदिक कथाओं का सच, उपनिषदों की अध्यात्म धारा,ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद एवं अथर्ववेद अध्यात्म शतक,

३. ऋषि दयानंद विषयक ग्रन्थ महर्षि दयानंद का राष्ट्रवाद, ऋषि दयानंद और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन, महर्षि दयानंद श्रद्धांजलि, महर्षि दयानंद प्रशस्ति, ऋषि दयानंद के ऐतिहासिक संस्मरण, स्वामी दयानंद के दार्शनिक सिद्धांत, दयानंद साहित्य सर्वस्व, महर्षि दयानंद प्रशस्ति काव्य,मैंने ऋषि दयानंद को देखा, ऋषि दयानंद की खरी खरी बातें, ऋषि दयानंद के चार लघु चरित, दयानंद चित्रावली (अंग्रेजी)ूउप कंलंदंदक ेतूंजप ापे सपमि ंदक पकमें– ेपअ दंदकंद ानसलंत,

४. महापुरुषों के जीवनचरित श्री कृष्ण चरित, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा कालूराम जी, कुंवर चाँद करण शारदा, नवजागरण के पुरोधा–स्वामी दयानंद, पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, ऋषि दयानंद के भक्त,प्रशंसक और सत्संगी, श्रद्धानन्द जीवनकथा, राजस्थान के आर्य महापुरुष

५. आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान, आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार, आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय, आर्यसमाज का इतिहास–पांच खंड का विवेचन, आर्यसमाज के बीस बलिदानी,

६. स्वामी दयानंद के ग्रंथों का संपादन चतुर्वेद विषय सूची, ऋग्वेद के प्रारंभिक २२ मन्त्रों का भाष्य, दयानंद शास्त्रार्थ संग्रह, दयानंद उवाच, महर्षि दयानंद कि आत्मकथा, उपदेश मंजरी,पंडित लेखराम रचित स्वामी दयानंद का जीवनचरित

७. अन्य ग्रन्थ बालकों की धर्म शिक्षा, पंडित रूद्र दत शर्मा ग्रंथावली भाग १, शुद्ध गीता, दयानंद दिग्विजयार्क, कविरत्न प्रकाशचंद्र अभिनन्दन ग्रन्थ, पंडित महेंद्र प्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ, श्रद्धानन्द ग्रंथवाली ६ भाग, ऋषि दयानंद प्रशस्ति, श्री दयानंद चरित

८. विभिन्न ग्रन्थ विद्यार्थी जीवन का रहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण की आलोचना, महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, आर्य लेखक कोष–१२०० आर्यविद्वानों का लेखन परिचय,

९. सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ ज्ञानदर्शन–एकादश समुल्लास की व्याख्या, विश्व धर्म कोष –सत्यार्थ प्रकाश , हिन्दू धर्म की निर्बलता

१०. अनूदित ग्रन्थ श्रीमद्भागवत (गुजराति), मीमांसा दर्शन (गुजराति), आर्यसमाज –लाला लाजपत राय (अंग्रेजी), श्रद्धानन्द ग्रंथवाली – कांग्रेस एंड आर्यसमाज एंड इट्स डेट्रेक्टर्स, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी–लाला लाजपत राय कृत का हिंदी अनुवाद, सूरज बुझाने का पाप (गुजराति)

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में 1000 के करीब शोधपूर्ण लेख भी शामिल हैं।

डॉ भारतीय जी की साहित्य साधना करीब एक लाख पृष्ठों से अधिक हैं और 50 से अधिक वर्षों का साधना और तप का परिणाम हैं।

ऐसी महान विभूति के विषय में आपका क्या विचार हैं। — डॉ. विवेक आर्य

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का संक्षिप्त परिचय

डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी (Dr- Shyama Prasad Mukherjee) महान शिक्षाविद, चिन्तक होने के साथ साथ भारतीय जनसंघ के संस्थापक भी थे, जिन्हें आज भी एक प्रखर राष्ट्रवादी और कट्टर देशभक्त (Patriot) के रूप में याद किया जाता है। 6 जुलाई, 1901 को कोलकाता (Kolkat) के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में जन्में डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी (Dr-Shyama Prasad Mukherjee) जी के पिता श्री आशुतोष मुखर्जी (Ashutosh Mukherjee) बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे. बाल्यावस्था से ही उनकी अप्रतिम प्रतिभा की छाप दिखने लग गई थी. कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा सम्पन्न डॉ मुखर्जी ने 1917 में मैट्रिक तथा 1921 में बी ए की उपाधि प्राप्त की, जिसके पश्चात् 1923 में उन्होंने लॉ (Law) की उपाधि अर्जित की और 1926 में वे इंग्लैण्ड (England) से बैरिस्टर बन स्वदेश लौटे. उन्होंने अपने ज्ञान और विचारों से तथा तात्कालिक परिदृश्य की ज्वलंत परिस्थितियों का इतना सटीक विश्लेषण किया कि समाज के हर वर्ग और तबके के बुद्धिजीवियों को उनकी बुद्धि का कायल होना पड़ा। अपनी कुशाग्र बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए मात्र 33 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय (Kolkata University) के कुलपति का पदभार संभालने की जिम्मेदारी उठा ली।

जल्द ही उन्होंने तत्कालीन शासन व्यवस्था और सामाजिक–राजनैतिक परिस्थितियों के विशद जानकार के रूप में समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था. एक राजनैतिक दल (Political Party) की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति (Muslim Appeasement Policy) के कारण जब बंगाल (Bengal) की सत्ता मुस्लिम लीग (Muslim League) की गोद में डाल दी गई और 1938 में आठ प्रदेशों में अपनी सत्ता छोड़ने की आत्मघाती और देश विरोधी नीति अपनाई गई तब डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने स्वेच्छा से देश प्रेम और राष्ट्रप्रेम का अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। डॉ मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता (Humanity) के उपासक और सिद्धांतों के पक्के इंसान थे. संसद में उन्होंने सदैव राष्ट्रीय एकता (National Integrity) की स्थापना को ही अपना प्रथम लक्ष्य रखा. संसद में दिए अपने भाषण में उन्होंने पुरजोर शब्दों में कहा था कि राष्ट्रीय एकता के धरातल पर ही सुनहरे भविष्य की नींव रखी जा सकती है.

उस समय जम्मू काश्मीर (Jammu&Kashmir) का अलग झंडा था, अलग संविधान (Constitution) था। वहां का मुख्यमंत्री (Chief Minister) प्रधानमंत्री (Prime minister) कहलाता था. लेकिन डॉ मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने जोरदार नारा भी बुलंद किया कि दृ एक देश में दो निशान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो विधान नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे. अगस्त 1952 में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त किया था कि "या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊंगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दूंगा''. जम्मू कश्मीर (Jammu&kashmir) में प्रवेश करने पर डॉ. मुखर्जी को 11 मई, 1953 को शेख अब्दुल्ला (Shekh Abdull) के नेतृत्व वाली सरकार ने हिरासत में ले लिया था. क्योंकि उन दिनों कश्मीर में प्रवेश करने के लिए भारतीयों को एक प्रकार से पासपोर्ट (Passport) टाइप का परमिट लेना पडता था और डॉ मुखर्जी बिना परमिट (Permit) लिए जम्मू कश्मीर चले गए थे. जहां उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद कर लिया गया और वहां गिरफ्तार होने के कुछ दिन बाद ही 23 जून, 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई.

वे भारत के लिए शहीद हो गए और भारत ने एक ऐसा व्यक्तित्व (Personality) खो दिया जो राजनीति को एक नई दिशा दे सकता था. डॉ मुखर्जी इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि (Cultural Aspect) से हम सब एक हैं, इसलिए धर्म के आधार पर किसी भी तरह के विभाजन (Division) के वे सख्त खिलाफ थे. उनका मानना था कि आधारभूत सत्य यह है कि हम सब एक हैं, हममें कोई अंतर नहीं है. हमारी भाषा एक है हमारी संस्कृति एक है और यही हमारी विरासत है. लेकिन उनके इन विचारों और उनकी मंशाओं को अन्य राजनैतिक दलों के तात्कालिक नेताओं ने अन्यथा रूप से प्रचारित–प्रसारित किया. लेकिन इसके बावजूद लोगों के दिलों में उनके प्रति अथाह प्यार और समर्थन बढ़ता गया। भारतीय इतिहास में उनकी छवि एक कर्मठ और जुझारू व्यक्तित्व वाले ऐसे इंसान की है जो अपनी मृत्यु के इतने वर्षों बाद भी अनेक भारतवासियों के आदर्श और पथप्रदर्शक हैं। — डॉ. विवेक आर्य

परिषद् के अन्तरंग सदस्यों की सेवा में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की द्विवार्षिक अन्तरंग सभा की बैठक

रविवार, 30 अगस्त 2015, प्रातः 11.30 बजे

आर्य समाज,कबीर बस्ती,दिल्ली–7

विचारणीय विषयः–

वार्षिक प्रगति विवरण,आय–व्यय लेखा जोखा, नये अधिकारियों का निर्वाचन ।

प्रीति–भोज–दोपहर 2.00 बजे

कृपया सभी साथी समय पर पंहुचे

–महेन्द्र भाई,महामन्त्री

आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री व पार्षद श्री यशपाल आर्य का अभिनन्दन

रविवार, 12 जुलाई 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से आयोजित समारोह में आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,श्री हुकमचन्द अरोड़ा,प्रवीन आर्या व विकास आर्य। द्वितीय चित्र–14 जुलाई 2015, पार्षद श्री यशपाल आर्य के अध्यक्ष, शिक्षा समिति दक्षिण दिल्ली नगर निगम चुने जाने पर सिविक सैन्टर, नई दिल्ली में बधाई देते डा.अनिल आर्य,श्री सोमनाथ आर्य व श्री बलदेवराज आर्य आदि।

डा.मुखर्जी को याद किया व जम्मू में आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री का अभिनन्दन

रविवार, 5 जुलाई 2015, डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी नगर,दिल्ली के आकाश अकादमी में डा. मुखर्जी के व्यक्तित्व व बलिदान पर विचार गोष्ठी का आयोजन डा. अनिल आर्य की अध्यक्षता में किया गया। श्री ओमप्रकाश त्रेहण, श्री ओम सपरा, श्री अरविन्द मिश्रा, श्री गौरव पुरी आदि ने अपने विचार रखे। चित्र में श्री पवन चौधरी, एडवोकेट को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, सरदार हरभजनसिंह देयोल, स्वामी ओम जी, श्री आकाश आदि। द्वितीय चित्र–जम्मू के रामलीला मैदान जानीपुर में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के युवक शिविर समापन समारोह में आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, श्री अरूण आर्य, मुकेश मैनी व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुभाष बब्बर।

आर्य युवा श्री स्वतन्त्र कुकरेजा का अभिनन्दन व मोहाली आर्य समाज का उत्सव सम्पन्न

12 जून 2015 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटोली, रोहतक में आयोजित समारोह में परिषद् के करनाल शाखा के अध्यक्ष श्री स्वतन्त्र कुकरेजा को सम्मानित करते स्वामी आर्य वेश जी, श्री सत्येन्द्रमोहन कुमार,स्वामी ओमवेश जी व श्री सन्तराम आर्य। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,मोहाली के 13 वें वाषिकोत्सव पर श्री कुलदीप खंडुजा को सम्मानित करते प्रि. रमेशचन्द जीवन, श्री नरेन्द्र आहुजा विवेक, श्री सोमदत शास्त्री व मन्त्री श्री विजय आर्य।

रोहतक में योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज की ओर से संस्कार वैली पब्लिक स्कूल,पटवापुर,रोहतक में योग शिविर लगाया गया। पूर्व पार्षद शिवकृष्ण आर्य,संजय ढाका,रक्षित आर्य बधाई के पात्र हैं।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री प्रकाशदेव चौधरी (आर्य समाज, लाजपत नगर, दिल्ली) का निधन।
2. आचार्य वेदभूषण जी (हैदराबाद) का निधन।
3. श्रीमती प्रीति डंग (धर्मपत्नि श्री सत्यनारायण डंग) का निधन।
4. स्वामी महेन्द्रानन्द जी (हरियाणा) का निधन।
5. श्रीमती जीवन ज्योति बत्रा (बहिन डा. सुदर्शन वर्मा) का निधन।
6. श्रीमती राजकुमारी वधवा (आर्य समाज, मोती नगर, दिल्ली) का निधन।

आर्य समाजों के निर्वाचन सम्पन्न

1. आर्य समाज, मयूर विहार, फेज–1, दिल्ली के चुनाव में श्री महेन्द्र कुमार चाठली–प्रधान, श्री अमीरचन्द रखेजा–मन्त्री व श्री तुलसीदास नन्दवानी–कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।
2. आर्य समाज, अर्जुन नगर, गुड़गांव के चुनाव में श्री सोमनाथ आर्य–प्रधान, श्री लक्ष्मण पाहुजा–मन्त्री व ओमप्रकाश आहुजा–कोषाध्यक्ष चुने गये।
3. आर्य समाज, विज्ञान नगर, कोटा, राजस्थान के चुनाव में श्री जे.एस. दुबे–प्रधान, श्री राकेश चड्डा–मन्त्री व श्री डा. किशोरीलाल दिवाकर कोषाध्यक्ष चुने गये।
4. आर्य समाज, रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली के चुनाव में श्री रामपाल पंचाल–प्रधान, श्री सुखवीरसिंह त्यागी–मन्त्री व श्री जगदीशचन्द शर्मा–कोषाध्यक्ष चुने गये।
5. आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर–7, दिल्ली के चुनाव में श्री राजेन्द्र तनेजा–प्रधान, श्री सुरेन्द्र गुप्ता–कार्यकारी प्रधान, श्री राजीव आर्य–मन्त्री व श्री देवराज आर्य–कोषाध्यक्ष चुने गये।

तदर्थ युवा उद्घोष की ओर से हार्दिक बधाई।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970